







# धनतेरस के दिन नई चीजें खरीदना अत्यंत ही शुभ

इस साल धनतेरस की तिथि को लेकर लोगों में असमंजस की स्थिति बनी हुई है। धनतेरस कब मनाया जाएगा, इसे लेकर हर कोई कंप्यूज है। बता दें कि धनतेरस से ही पांच दिवसीय दिवाली उत्सव आरंभ हो जाता है। हर साल कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को धनतेरस का त्योहार मनाया जाता है। धनतेरस को धनत्रयोदशी, धन्वंतरि त्रयोदशी और धन्वंतरि जयंती के नाम से भी जाना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इसी दिन देवताओं के चिकित्सक और आयुर्वेद के देवता भगवान धन्वंतरि का जन्म हुआ था। तो आइए अब जानते हैं कि इस साल धनतेरस असल में किस दिन मनाया जाएगा।



**जानें पूजा मुहूर्त**

कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि का आरंभ 29 अक्टूबर को सुबह 10 बजकर 31 मिनट पर हो रहा है। त्रयोदशी तिथि समाप्त 30 अक्टूबर को दोपहर 1 बजकर 15 मिनट पर होगा। ऐसे में उदयातिथि के अनुसार, इस साल धनतेरस 29 अक्टूबर को मनाया जाएगा। धनतेरस की पूजा के शुभ मुहूर्त 29 अक्टूबर को शाम 6 बजकर 31 मिनट से रात 8 बजकर 13 मिनट तक का रहेगा।

**धनतेरस का महत्व**

हिंदू धर्म में धनतेरस का विशेष महत्व है। इस दिन नई चीजें खरीदना अत्यंत ही शुभ माना जाता है। कहते हैं कि इस दिन खरीदी गई चीज अक्षय फल प्रदान करने वाली होती है। धनतेरस के दिन आप जो शीर्ष खरीदेंगे उसका तेरह युगा फल आपको मिलेगा। धनतेरस के दिन माता लक्ष्मी, भगवान कुबेर और धनवती जी की पूजा जरूर करें। इससे घर में सुख-समृद्धि और खुशहाली आती है।

**धन और समृद्धि की कामना**

धनतेरस के दिन खुशी का माहौल होता है। हर कोई चाहता है कि धन, समृद्धि उनके घर आएं और क्योंकि जीवन में धन भी महत्वपूर्ण है। धन पासि के लिए श्री सूक्तम और विधि विधान का पाठ किया जाता है। श्री सूक्तम विद्या एक वैदिक विद्या है यहां तक कि देवों के ऋषियों ने भी इसका उल्लेख किया है और कहा है कि पैसा कमाना चाहिए, लेकिन हमें यह पैसा ईमानदारी और अखंता के साथ कमाना चाहिए। कथावाचक वे बताया कि पैसा कमाने के बाद, उसे मां लक्ष्मी की अर्पण करना चाहिए। इन दिन घर पर रंगोली बनाएं और घर के आंगन में दीप जलाएं।

## दिवाली पर इसलिए की जाती तीन देवियों की पूजा

ब्रह्मा, विष्णु और महेश से है इनका संबंध

दीपावली एक पांच दिवसीय त्योहार है, जिसमें धनतेरस, काली चौदस, दीपावली, नववर्ष और भाई दूज शामिल हैं। इन पांच दिवों को पंचोत्सव भी कहा जाता है। इस प्रकार, पांच दिवसीय महापर्व की शुरूआत होती है। धनतेरस, काली चौदस और दीपावली विभिन्न पूजाओं के तीन दिन हैं। धनतेरस के दिन लक्ष्मी के साथ कुबेर देव की पूजा करना महत्वपूर्ण है, तो चलिए कथावाचक विजयभाई व्यास से जानते हैं कि कैसे धनतेरस, काली चौदस और दीपावली के ये तीन दिन एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और उनका क्या महत्व है।



धनतेरस, काली चौदस, दीपावली तीन अलग-अलग दिवों पर पूजा की जाती है। धनतेरस का मतलब है महालक्ष्मी की पूजा, कालीचौदस का मतलब है महाकाली की पूजा, और दीपावली मा सरस्वती की पूजा का दिन है। इन तीन देवियों को विश्वाणितिका का रूप माना जाता है। विश्वाणितिका का मतलब है सत्तव, रजस और तमस। यह माता जी इन तीन गुणों से संबंधित हैं। इसलिए तीन दिनों में तीन देवियों की पूजा करना विशेष महत्व रखता है।

## दिवाली के अगले दिन होती है गोवर्धन पूजा

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को दिवाली के अगले दिन आने वाले त्योहार को गोवर्धन पूजा के नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश की कृष्ण जन्म शुभमें इस दिन इसकी बड़ी धूमधाम रहती है। भगवान श्री कृष्ण के साथ ही साथ गोवर्धन पर्वत व गउठों आदि की विशेष रूप से इस दिन पूजा की जाती है। भगवान श्री कृष्ण का गउठों, गोप-गोपियों व गोवर्धन पर्वत से विशेष लगवा था, इसलिए गाय के गोबर से इस दिन गोवर्धन पर्वत की आकृति बनाकर उसकी पूजा अर्चना, भगवान श्री कृष्ण को 56 प्रकार का भोग लगाकर की जाती है। इस त्योहार का संबंध देव इंद्र से होने के कारण ही पूजा में देव वरुण, इंद्र व अर्णव देव को भी शामिल किया जाता है।

गोवर्धन पर्वत के पूजन आदि का चलन कैसे हुआ, इस संबंध में पौराणिक साहित्य से मिली जानकारी के अनुसार पता चलता है कि देव इंद्र को अपने विशाल राज पाठ व शिवत का बड़ा क्रियान्वयन हो गया था और वह अपने देवी की किसी को नहीं समझता था। इसी कारण दूसरे सभी देवों देवता भी उससे तंत्र रखते थे। भगवान श्री कृष्ण भी देव इंद्र के अभिमानी व्यवहार से भूत्तीभी परिवर्त थे और उन्होंने अपनी लीला के माध्यम से उसे सबक सिखाने की जोगना भी बना रखी थी। एक दिन सभी ब्राह्मणों अपने आर्यांशुओं की तैयारी कर रहे थे। जिस पर भगवान श्री कृष्ण अपनी माता यशोधा से उसके बारे में पूजने लगे कि यह आज सब वर्षा हो रहा है। तब माता यशोधा ने श्री कृष्ण को बताया था कि ये सब देव इंद्र को प्रसन्न कर उसके द्वारा हो रहा है। तब माता यशोधा ने श्री कृष्ण को बताया था कि ये सब देव इंद्र को प्रसन्न कर उसके पूजापाठ के लिए किया जा रहा है। देव इंद्र के

वर्षा पानी से ही थे ये अन्न, घास आदि पैदा होता है, जिसे हम व सभी पूजुओं का पेट भरता है। तभी तो हम सभी देव इंद्र की पूजा करते हैं। इस पर भगवान श्री कृष्ण ने अपनी मां यशोधा से कहा, 'हह तो गतर है माँ! घास, लक्ष्मी, पैश-पौधे व अन्य तो गोवर्धन पर्वत देता है, तब तो उसकी तुम सभी को पूजा करनी चाहिए।'

भगवान श्री कृष्ण के देसा कहने पर सभी लोग गोवर्धन पर्वत की पूजा करने लगे, जिससे देव इंद्र भगवान कृष्ण से नाराज हो गए और उसे व लोगों को सबक सिखाने के लिए जोर-जोर से वर्षा बरसाने लगते हैं, जो कि तात्कार सात दिन तक चलती रही। इसके फलस्वरूप लोगों के पूजुओं व अन्न आदि की बुरी तरह से तबाही हो गई, जिससे सभी लोग नाराज हो गए तो उस समय पहुंच कर श्री कृष्ण की शिकायत करने लगता है।



भगवान श्री कृष्ण ने अपनी कठिनाई अंगुली से गोवर्धन पर्वत को उठाकर व उसके अंदर सभी को समेट कर बचा लेते हैं। देव इंद्र भगवान कृष्ण के बचाव कार्य से और कुपित हो जाता है और वह ब्रह्माजी के पास पहुंच कर श्री कृष्ण की पूजा-अर्चना 56 विश्वास के भोग के साथ की गई और वह दीप जलाया। इसके बाद देव इंद्र को समझते हुए बताते हैं कि श्री कृष्ण कोई मामूली व्यक्तित्व नहीं है, यह तो भगवान विष्णु के अवतार है और तुम डकनी लीलाओं से बचकर रहो नहीं तो पछाड़ाओगे। इतना सुनने पर देव इंद्र की अंसें खुल गई और फिर वह श्री कृष्ण से क्षमा मांगने लगे। इसके पश्यत देव इंद्र द्वारा श्री कृष्ण की पूजा-अर्चना 56 विश्वास के भोग के साथ की गई और वह दीप जलाया। इस समस्त देव में विशेष रूप में नाराज हो जाता है। आज जसमर्त देव में इस त्योहार को बढ़े ही धूमधाम से विशेष रूप में मनाया जाता है।

## बहुत रोचक है जमवाय माता मंदिर का इतिहास

प्राचीन जमवाय माता मंदिर का इतिहास काफी रोचक है। जमवाय माता मंदिर जयपुर के जमवायमगढ़ बांध के पास अरावली की पहाड़ी की तलहती पर स्थित है। जमवाय माता मंदिर का इतिहास काफी पुराना है। राजा दूल्हराय ने जमवाय माता मंदिर का निर्माण करवाया था। देशभर से कछवाह वंश के लोग माता की पूजा करने जाए हैं। नवरात्रि में माता के दरबार में काफी संख्या में लोग पहुंचते हैं और माता की विशेष पूजा अर्चना की जाती है। जमवाय माता जयपुर जिले के जमवायमगढ़ में बांध के पास स्थित है। जमवाय माता का मंदिर काफी प्राचीन है और इतिहास से जुड़ा हुआ है। पौराणिक दृष्टि से देखा जाए तो माता सती के पैर की अंगुली कट कर यहां गिरी थी और यहां शक्ति पीठ बना। अधिक रूप में जमवाय माता यहां प्रकट हुई। माता का इतिहास दूंड़ा

राजा समेत पूरी सेना को देवी से मिला था जीवनदान कछवाहों के अलावा यहां अन्य समाजों के लोग भी मन्जन मांगने आते हैं।

**माता के बाद श्री रघुनाथ जी मंदिर में दर्शन**

नवरात्रि में जमवाय माता मंदिर में विशेष व्यास्तरण की गई है। सुबह से लोक शाम तक काफी संख्या में भक्त माता के दरबार पहुंच होते हैं। नवरात्रि में जमवाय माता मंदिर में काफी दूर-दूर से भक्त पहुंचते हैं। कोई हाथों में धज्ज लेकर तो कोई पद यात्रा के दौरान मंदिर में पहुंचते हैं। अपनी मनोकामनाएं लिए तो लोक दर्शन करते हैं। जमवाय माता मंदिर के साथ लोक शक्ति पीठ के रूप में प्रतिष्ठित हैं। माता के धोक लगाने के लिए आते हैं। जयपुर राज परिवार में श्री यहू परंपरा रही है। क्षत्रिय समाज के अलावा अन्य जातियों और समाज के लोग भी जमवाय माता के धोक लगाने के लिए आते हैं। जब भी परिवार में किस



















